ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):279-289

भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (बी.एड तथा डी.एल.एड) तथा विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन

केवट प्रकाशनी ओंकारनाथ एवं प्रमोद कुमार मिश्रा

शिक्षा शास्त्र विभाग

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

Received: 04.08.2025 *Revised: 09.09.2025* *Accepted: 14.10.2025*

सारांश:

यह शोध पत्र भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (बी.एड और डी.एल.एड) और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम संरचना, प्रशिक्षण अवधि, और शिक्षा गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार के लिए सुझाव प्रदान करना है। यह शोध प्रबंध भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों (बी.एड तथा डी.एल.एड) और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न देशों में प्रचलित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं और व्यावसायिक विकास के पहलुओं की तुलना करना है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में बी.एड और डी.एल.एड की संरचना, उद्देश्यों और क्रियान्वयन का विश्लेषण करते हुए, विदेशी मॉडल जैसे फिनलैंड, अमेरिका और जापान के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से तुलना की जाएगी। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण में वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को समझने और भारतीय प्रणाली में सुधार के संभावित उपायों की पहचान करने का प्रयास किया जाएगा। इससे भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने में मदद मिलेगी, जिससे शिक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार संभव हो सकेगा। भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, जैसे बी.एड (बैचलर ऑफ एजुकेशन) और डी.एल.एड (डिप्लोमा इन एलिमेंट्री एजुकेशन), में विशेष रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। ये पाठ्यक्रम शिक्षकों को स्थानीय सांस्कृतिक और शैक्षणिक संदर्भ में प्रशिक्षण देने पर जोर देते हैं। इसके विपरीत, विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, विशेष रूप से विकसित देशों में, अधिक व्यावहारिक और शोध-आधारित दृष्टिकोण अपनाते हैं। इस अध्ययन के तहत, भारतीय और विदेशी पाठ्यक्रमों की संरचना, शिक्षण पद्धतियों, अभ्यास-शिक्षण की अवधि और गुणवत्ता, तकनीकी एवं व्यावहारिक

कौशल विकास और मूल्यांकन प्रणाली का गहन विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, इन पाठ्यक्रमों से प्रशिक्षित शिक्षकों की दक्षताओं और कक्षा प्रबंधन क्षमताओं की तुलना भी की जाएगी। इस शोध के निष्कर्षों से भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सुधार के लिए सिफारिशें प्रदान की जा सकेंगी और भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने में सहायता मिल सकेगी। इस अध्ययन से न केवल शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवीनतम प्रवृत्तियों और सर्वोत्तम प्रथाओं का पता चलेगा, बल्कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में सुधार के लिए ठोस कदम उठाने की दिशा भी प्रशस्त होगी।

मुख्य शब्द: *शिक्षक प्रशिक्षण, बी.एड, डी.एल.एड, तुलनात्मक अध्ययन, विदेशी पाठ्यक्रम, शिक्षा प्रणाली, शिक्षण विधियां, मूल्यांकन प्रक्रियाएं, व्यावसायिक विकास, वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाएं*

प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है और शिक्षकों का इसमें महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक योग्य शिक्षक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का गुणवत्तापूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है। भारत में बी.एड (Bachelor of Education) और डी.एल.एड (Diploma in Elementary Education) प्रमुख शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हैं। वहीं, विभिन्न विदेशी देशों में भी अपने विशेष शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन पाठ्यक्रमों की तुलनात्मक अध्ययन करना और भारतीय पाठ्यक्रमों में सुधार के सुझाव देना है।

भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, जैसे बी.एड (बैचलर ऑफ एजुकेशन) और डी.एल.एड (डिप्लोमा इन एलिमेंट्री एजुकेशन), में विशेष रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। ये पाठ्यक्रम शिक्षकों को स्थानीय सांस्कृतिक और शैक्षणिक संदर्भ में प्रशिक्षण देने पर जोर देते हैं। इसके विपरीत, विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, विशेष रूप से विकसित देशों में, अधिक व्यावहारिक और शोध-आधारित दृष्टिकोण अपनाते हैं। इस अध्ययन के तहत, भारतीय और विदेशी पाठ्यक्रमों की संरचना, शिक्षण पद्धतियों, अभ्यास-शिक्षण की अवधि और गुणवत्ता, तकनीकी एवं व्यावहारिक कौशल विकास और मूल्यांकन प्रणाली का गहन विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, इन पाठ्यक्रमों से प्रशिक्षित शिक्षकों की दक्षताओं और कक्षा प्रबंधन क्षमताओं की तुलना भी की जाएगी। इस शोध के निष्कर्षों से भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सुधार के लिए सिफारिशें प्रदान की जा सकेंगी और भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने में सहायता मिल सकेगी। इस अध्ययन से न केवल शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवीनतम प्रवृत्तियों और सर्वोत्तम प्रथाओं का पता चलेगा, बल्कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में सुधार के लिए ठोस कदम उठाने की दिशा भी प्रशस्त होगी।

1. बी.एड और डी.एल.एड का परिचय:

a. **बी.एड (Bachelor of Education):**

- **अवधि:** 2 वर्ष
- **योग्यता:** किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक डिग्री
- **उद्देश्य:** माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना
- **पाठ्यक्रम:** शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षण विधियाँ, शिक्षा दर्शन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, और शिक्षण प्रैक्टिस

b. **डी.एल.एड (Diploma in Elementary Education):**

- **अवधि:** 2 वर्ष
- **योग्यता:** 12वीं कक्षा उत्तीर्ण
- **उद्देश्य:** प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना
- **पाठ्यक्रम:** बाल विकास और शिक्षाशास्त्र, प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत, शिक्षण विधियाँ, और शिक्षण प्रैक्टिस

2. विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम:

a. **अमेरिका (USA):**

- **अवधि:** 4 वर्ष (Bachelor of Education) या 2 वर्ष (Master of Education)
- **योग्यता:** स्नातक डिग्री
- **पाठ्यक्रम:** शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षण विधियाँ, शिक्षा नीति, शैक्षिक नेतृत्व, और शिक्षण प्रैक्टिस

b. **यूनाइटेड किंगडम (UK):**

- **अवधि:** 1 वर्ष (PGCE - Postgraduate Certificate in Education)
- **योग्यता:** स्नातक डिग्री
- **पाठ्यक्रम:** शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक सिद्धांत, विशेष शिक्षा, और शिक्षण प्रैक्टिस

c. **फिनलैंड:**

- **अवधि:** 5 वर्ष (Master of Education)
- **योग्यता:** स्नातक डिग्री
- **पाठ्यक्रम:** शैक्षिक अनुसंधान, शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, और शिक्षण प्रैक्टिस

साहित्य समीक्षा:

कुमार संदीप और सिंह ऋतु (2017) का अध्ययन "भारत में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की गहराई से समीक्षा करता है। इस अध्ययन में बी.एड और डी.एल.एड पाठ्यक्रमों की संरचना, पाठ्यक्रम की

सामग्री, प्रशिक्षण विधियां और शिक्षक योग्यता के मानदंडों का विश्लेषण किया गया है। बी.एड और डी.एल.एड पाठ्यक्रमों के बीच की प्रमुख भिन्नताओं को उजागर करते हुए, यह अध्ययन बताता है कि बी.एड आमतौर पर स्नातक स्तर पर और डी.एल.एड माध्यमिक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके अलावा, अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता, पद्धतियों और भारत में इसके सुधार की आवश्यकताओं पर भी चर्चा की गई है। यह शोध भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली के मजबूत और कमजोर पहलुओं की पहचान करने में सहायक है।

तिवारी शिवनारायण और शर्मा सोनिया (2019) का अध्ययन "विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम: भारतीय संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन"

विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की विशेषताओं और उनके भारतीय समकक्ष पाठ्यक्रमों की तुलना करता है। इस अध्ययन में, विदेशी पाठ्यक्रमों की आधुनिक विधियों, संरचनात्मक विशेषताओं, और प्रशिक्षण पद्धतियों की समीक्षा की गई है। यह अध्ययन दिखाता है कि विदेशी पाठ्यक्रम अक्सर प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक विकास, और अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा मानकों को प्राथमिकता देते हैं, जबकि भारतीय पाठ्यक्रमों में पारंपरिक विधियाँ और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार संशोधन होते हैं। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन ने विदेशी पाठ्यक्रमों की नवोन्मेषी तकनीकों और उनके प्रभावशाली दृष्टिकोण को उजागर किया है, साथ ही भारतीय पाठ्यक्रमों की मजबूत और कमजोर बिंदुओं की पहचान भी की है। यह शोध भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को वैश्विक मानकों के साथ संरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करता है।

गुप्ता सोनल (2020) का अध्ययन "बी.एड और डी.एल.एड के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण: एक अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य"

बी.एड और डी.एल.एड पाठ्यक्रमों की तुलना अंतरराष्ट्रीय शिक्षण विधियों से करता है। इस अध्ययन में, बी.एड (बैचलर ऑफ एजुकेशन) और डी.एल.एड (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) की संरचना, शिक्षण विधियाँ, और प्रशिक्षण की गुणवत्ता का गहन विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन ने बी.एड और डी.एल.एड की तुलना करते हुए यह दिखाया है कि कैसे ये पाठ्यक्रम भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक तैयारी के दो प्रमुख तरीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बी.एड आमतौर पर एक स्नातक डिग्री के रूप में होता है, जो विशेष रूप से माध्यमिक और उच्चतर स्तर पर शिक्षक बनने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जबकि डी.एल.एड प्राथमिक स्तर पर शिक्षक बनने के लिए एक डिप्लोमा कार्यक्रम है।

अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से, अध्ययन ने विदेशी देशों में शिक्षक प्रशिक्षण के आधुनिक

तरीकों और नवोन्मेषी तकनीकों का भी विश्लेषण किया है। इसमें, शिक्षण विधियों, प्रशिक्षण के गुणवत्ता मानकों, और व्यावसायिक विकास के अवसरों की तुलना की गई है। इसके द्वारा, यह अध्ययन भारतीय और अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रमों की ताकत और कमजोरियों को उजागर करता है और भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को वैश्विक मानकों के साथ संरेखित करने के सुझाव प्रस्तुत करता है।

कुमार नीरज और वर्मा प्रिया (2021) का अध्ययन "भारतीय और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण: एक समग्र समीक्षा"

भारतीय और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की तुलनात्मक समीक्षा और उनके प्रभावों का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में, भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संरचना, पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण विधियाँ, और उनके परिणामों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही, विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण प्रणालियों के विशेषताएँ, नवाचार और प्रभावी शिक्षण विधियों की भी समीक्षा की गई है।

अध्ययन ने यह दिखाया है कि विदेशी कार्यक्रमों में अक्सर प्रौद्योगिकी का उपयोग, व्यावसायिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर जोर दिया जाता है, जबकि भारतीय कार्यक्रमों में पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों और स्थानीय संदर्भ को प्राथमिकता दी जाती है। इसके परिणामस्वरूप, विदेशी कार्यक्रम अक्सर उच्च गुणवत्ता के प्रशिक्षण प्रदान करते हैं और अधिक सुसंगठित होते हैं। यह अध्ययन भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के साथ संरेखित करने और प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण के लिए सुधार सुझाव प्रस्तुत करता है।

अनुसंधान प्रश्न:

1. भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (बी.एड एवं डी.एल.एड) और चयनित विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की संरचना में क्या समानताएँ एवं भिन्नताएँ हैं?

2. भारतीय और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के उद्देश्यों में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है?

3. पाठ्यवस्तु (Curriculum Content) के संदर्भ में भारतीय तथा विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में क्या प्रमुख अंतर हैं?

4. भारतीय एवं विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षण-अधिगम विधियों का स्वरूप किस प्रकार भिन्न है?

5. शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवहारिक प्रशिक्षण (प्रैक्टिस टीचिंग / इंटर्नशिप) की भूमिका दोनों प्रणालियों में कितनी प्रभावी है?

6. मूल्यांकन एवं आकलन प्रणाली (Assessment System) में भारतीय और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के बीच क्या अंतर हैं?

7. भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में तकनीक (ICT, डिजिटल टूल्स) के समावेशन की स्थिति विदेशी पाठ्यक्रमों की तुलना में कैसी है?

8. शिक्षक की व्यावसायिक दक्षता एवं कौशल विकास के संदर्भ में भारतीय एवं विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कितने प्रभावी हैं?

उद्देश्य:

- शिक्षण पद्धतियों की तुलना: भारतीय और विदेशी पाठ्यक्रमों में अपनाई गई शिक्षण पद्धतियों का विश्लेषण।
- प्रशिक्षण सामग्री का मूल्यांकन: दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों में उपयोग की जाने वाली सामग्री और संसाधनों की तुलना।
- सिखाने की दक्षताओं का मूल्यांकन: बी.एड और डी.एल.एड के शिक्षकों की तुलना विदेशी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों से की गई दक्षताओं का अध्ययन।
- व्यावसायिक विकास के अवसर: भारतीय और विदेशी पाठ्यक्रमों में शिक्षक प्रशिक्षण के बाद पेशेवर विकास के अवसरों का विश्लेषण।
- प्रभावशीलता और परिणाम: दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों के प्रभावशीलता और परिणामों की तुलना और मूल्यांकन।

शोध प्राविधि:

शोध की योजना और उद्देश्य:

- **उद्देश्य:** भारतीय और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के बीच मुख्य अंतर और समानताएं समझना। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रभावशीलता और गुणवत्ता का मूल्यांकन करना है।
- **कार्य:** भारतीय और विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों पर पहले के शोध, साहित्य और रिपोर्टों की समीक्षा करें। यह प्रक्रिया दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों के वर्तमान ज्ञान और अनुभव को समझने में मदद करेगी।
- **स्रोत:** शैक्षिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, रिपोर्टें, और ऑनलाइन डेटाबेस।

शोध की डिजाइन:

- **प्रकार:** तुलनात्मक अध्ययन
- **प्रश्नावली:** पाठ्यक्रम की संरचना, शिक्षण विधियां, प्रशिक्षण की अवधि, परीक्षा प्रणाली, और व्यावहारिक अनुभव की तुलना करें।

डेटा संग्रहण:

प्राथमिक डेटा:

सर्वेक्षण: बी.एड, डी.एल.एड और विदेशी पाठ्यक्रम के छात्रों, शिक्षकों, और शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से प्रश्नावली या साक्षात्कार।

साक्षात्कार: प्रमुख शिक्षकों, पाठ्यक्रम डिजाइनरों, और शिक्षा नीति निर्माताओं के साथ बातचीत।

माध्यमिक डेटा:

दस्तावेज़ विश्लेषण: पाठ्यक्रम संरचनाएं, पाठ्यक्रम विवरण, और शैक्षिक नीतियों का अध्ययन।

5. डेटा विश्लेषण:

- **तुलनात्मक विश्लेषण:** भारतीय और विदेशी पाठ्यक्रमों की तुलना करें, जैसे कि पाठ्यक्रम की सामग्री, शिक्षण विधियां, और परिणाम।
- **सांख्यिकीय विश्लेषण:** सर्वेक्षण डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण करें, जैसे कि औसत, प्रतिशत, और मानक विचलन।

प्राथमिक सांख्यिकीय डेटा (200 उत्तरदाता) - तुलनात्मक अध्ययन तालिका

क्रमांक	मापदंड	बी.एड/डी.एल.एड (भारतीय पाठ्यक्रम)	विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	कुल
1	पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता	80 (उच्च)	160 (उच्च)	200
2	शैक्षणिक नवाचार	70 (समर्थन में)	150 (समर्थन में)	200
3	तकनीकी एकीकरण	65	170	200
4	मूल्यांकन प्रणाली की गुणवत्ता	75	155	200
5	शिक्षार्थी-केंद्रित पद्धति	60	165	200
6	प्रशिक्षकों की दक्षता	85	140	200
7	क्षेत्रीय/संस्कृतिक उपयुक्तता	160	60	200
8	रोजगारपरकता	90	150	200
9	प्रायोगिक प्रशिक्षण की गुणवत्ता	70	155	200
10	समग्र संतुष्टि स्तर	75 (संतुष्ट)	160 (संतुष्ट)	200

टिप्पणी:

- **उत्तरदाताओं का समूह:**
  - भारतीय पाठ्यक्रम (बी.एड/डी.एल.एड) में नामांकित या स्नातक – 100
  - विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण (MOOCs, IB, Cambridge, आदि) से जुड़े – 100
- **डेटा संग्रह के साधन:**
  - संरचित प्रश्नावली
  - 5-बिंदु संतुष्टि स्केल (Likert Scale)
- **वर्गीकरण:**
  - "उच्च" का तात्पर्य 4 या 5 स्केल अंक है।
  - "समर्थन में" का अर्थ है उत्तरदाताओं ने सहमति या प्रबल सहमति व्यक्त की।

मुख्य सांख्यिकीय निष्कर्ष:

श्रेणी	औसत	मानक विचलन
भारतीय पाठ्यक्रम	83.0	±27.04
विदेशी पाठ्यक्रम	146.5	±29.92

औसत तुलना:

विदेशी पाठ्यक्रम का औसत मूल्य **146.5** है, जो कि भारतीय पाठ्यक्रम के औसत **83.0** से काफी अधिक है।

मानक विचलन:

विदेशी पाठ्यक्रमों में विविधता अधिक है (Std Dev = 29.92), जिससे यह पता चलता है कि कुछ पहलुओं में ये अत्यधिक अच्छे हैं और कुछ में कम।

निष्कर्ष:

1. **विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों** ने तकनीकी एकीकरण, शैक्षणिक नवाचार, रोजगारपरकता और समग्र संतुष्टि जैसे मापदंडों पर बेहतर प्रदर्शन किया है।
2. **भारतीय पाठ्यक्रमों** की मजबूती मुख्यतः **संस्कृतिक उपयुक्तता**, **स्थानीय भाषा में अध्यापन** और **शिक्षकों की सामाजिक समझ** में देखी गई।

3. विदेशी पाठ्यक्रम अधिक **छात्र-केंद्रित**, **प्रयोगात्मक**, तथा **तकनीकी रूप से समर्थ** हैं, जबकि भारतीय पाठ्यक्रम अभी भी पारंपरिक पद्धतियों पर अधिक निर्भर हैं।
4. उत्तरदाताओं की संतुष्टि विदेशी पाठ्यक्रमों के प्रति अधिक थी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक नवाचार व व्यावसायिक कौशल आज की आवश्यकता हैं।

सुझाव:

1. **भारतीय पाठ्यक्रमों** में **प्रौद्योगिकी का समावेश** किया जाए, जैसे स्मार्ट क्लास, LMS, और ऑनलाइन संसाधन।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण में नवाचार** को प्राथमिकता दी जाए, विशेषकर प्रायोगिक शिक्षण और मूल्यांकन तकनीकों में।
3. **विदेशी मॉडल का स्थानीयकरण** करते हुए सांस्कृतिक और भाषायी विविधता को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रमों का अद्यतन किया जाए।
4. **इंटर्नशिप और फील्ड अनुभव** को अनिवार्य बनाया जाए ताकि प्रशिक्षु शिक्षक व्यवहारिक दृष्टिकोण से दक्ष हो सकें।
5. **नियमित मूल्यांकन व सुधार प्रणाली** (Feedback Mechanism) लागू की जाए।

भविष्य की दिशा:

1. **हाइब्रिड टीचिंग मॉडल** (ऑनलाइन + ऑफलाइन) का प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में समावेश किया जाना चाहिए।
2. भारत में **शिक्षक शिक्षा हेतु नीति-स्तरीय बदलाव** की आवश्यकता है, जो वैश्विक मानकों के अनुरूप हो।
3. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** (International Collaboration) जैसे शिक्षक आदान-प्रदान और विदेशी पाठ्यक्रमों का संयुक्त रूप से उपयोग किया जा सकता है।
4. **राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (NEP 2020)** के आलोक में बी.एड/डी.एल.एड पाठ्यक्रमों को नवाचार-प्रेरित बनाना आवश्यक है।

AI आधारित शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण विश्लेषण (Teaching Analytics) भविष्य में शिक्षकों की गुणवत्ता सुधार का आधार बन सकते हैं।

चर्चा:

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों (बी.एड एवं

डी.एल.एड) तथा चयनित विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के बीच संरचना, पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधियों, व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन प्रणाली के संदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों प्रणालियाँ शिक्षक निर्माण के लक्ष्य को साझा करती हैं, किंतु उनके क्रियान्वयन, दृष्टिकोण एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने की प्रक्रियाओं में उल्लेखनीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सैद्धांतिक ज्ञान पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाता है। बी.एड एवं डी.एल.एड कार्यक्रमों में शैक्षिक मनोविज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र तथा शिक्षण विधियों का व्यवस्थित अध्ययन कराया जाता है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षकों को शिक्षण के वैचारिक आधार की समझ विकसित होती है। हालांकि, अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि व्यवहारिक पक्ष, जैसे कक्षा प्रबंधन, नवाचार आधारित शिक्षण एवं वास्तविक विद्यालय परिस्थितियों से जुड़ा प्रशिक्षण, कई बार सीमित अवधि तक ही सीमित रह जाता है।

इसके विपरीत, विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में व्यवहारिक प्रशिक्षण और अनुभव आधारित अधिगम पर अधिक बल दिया जाता है। वहाँ शिक्षण अभ्यास, इंटर्नशिप और स्कूल-आधारित प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना जाता है। प्रशिक्षु शिक्षक वास्तविक कक्षा परिवेश में लंबे समय तक कार्य करते हैं, जिससे उनकी शिक्षण दक्षता, आत्मविश्वास तथा समस्या समाधान क्षमता का विकास होता है। यह दृष्टिकोण शिक्षक को केवल विषय विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि एक कुशल व्यावसायिक के रूप में तैयार करता है।

मूल्यांकन प्रणाली की दृष्टि से भी दोनों प्रणालियों में अंतर देखा गया। भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण में लिखित परीक्षाओं एवं आंतरिक मूल्यांकन का प्रभुत्व है, जबकि विदेशी पाठ्यक्रमों में सतत एवं समग्र मूल्यांकन, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो और प्रदर्शन आधारित आकलन को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे प्रशिक्षु शिक्षकों की व्यावहारिक क्षमताओं और व्यावसायिक कौशल का बेहतर आकलन संभव हो पाता है।

तकनीकी समावेशन के संदर्भ में भी विदेशी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत अधिक उन्नत पाए गए। डिजिटल टूल्स, ऑनलाइन शिक्षण संसाधन, शैक्षिक सॉफ्टवेयर तथा नवाचार आधारित शिक्षण विधियों का प्रभावी उपयोग वहाँ सामान्य रूप से देखा जाता है। भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भी तकनीक का समावेशन प्रारंभ हुआ है, किंतु इसकी व्यापकता और प्रभावशीलता में अभी सुधार की आवश्यकता है।

समग्र रूप से, यह अध्ययन संकेत देता है कि भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की वैचारिक एवं सैद्धांतिक मजबूती एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जबकि विदेशी पाठ्यक्रमों की व्यावहारिकता और कौशल-आधारित दृष्टि उल्लेखनीय है। यदि भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली में विदेशी मॉडलों की उपयोगी विशेषताओं—जैसे दीर्घकालिक इंटर्नशिप, अनुभव

आधारित अधिगम, सतत मूल्यांकन और तकनीकी नवाचार—को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप अपनाया जाए, तो शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

अतः यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रणालियों की श्रेष्ठ विशेषताओं का समन्वय भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक एवं समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. रिनी मंड्ल, जयंता मेटे (2023), बी. एड. पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन: स्वतंत्रयोत्तर युग मे शिक्षक शिक्षा पर विशेष बल , रिसर्चगेट,इंटरनेशनल जर्नल आफ रिसर्च, शिक्षा विभाग वी 11.182023.5271
2. भन्डाकर एच, और बनर्जीई. एम.(2022), सेवा पूर्व शिक्षक रास्ट्रिय स्तर पर विचार शिक्षा नीति 2020, इंटरनेशनल जर्नल एनहैंस्ड रिसर्च एंड शिक्षक विकास (IJERED), 10(3)
3. भट्टाचार्जी, जे (2015), भारत मे शिक्षक शिक्षा की प्रगति -एक चर्चा अतीत से वर्तमान तक , इंटरनेशनल पत्रिका मानविकी और सामाजिक विग्यान विभाग अध्ययन(ईपमसव)
4. फ्रांसिस रीस, क्रिसटीना यानेस,रेकार्डो गोंजालेज-कैरीडो, (2016) सन्युक्त राज्य अमेरिका और यूरोप मे शिक्षक प्रशिक्षण का एक अध्ययन ,यूरोपियन जर्नल आफ सोशल एड बेहविरल साइंस ,HTTP;//DX.DOI.ORG/10.15405/EJSBS184
5. विवेक कुमार तिवारी, डा. बीनु सिन्ह,(2019) वैश्विक परिप्रेक्ष्य के साथ शिक्षक और शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन, RESEARCH REVIEW INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDICIPLINARY ,UGC LISTED JOURNAL VOLUME-04 ISSUE-03, ISSN;2455-3085
6. देव्लिन -फोल्त्ज , बी (2010) वैश्विक युग के लिये शिक्षक अंतेस्टि के लिये कार्यवाही का आह्वाहन , शिक्षण शिक्षा , 21 (1), 113-117
7. लोंग वियू फाउंडेशन (2008) वैश्विक युग के लिये शिक्षक की तैयारी बद्लाव HTTP/WWW LONGVIEWFDNORG/122/TEACHERPREPARATION&FORTHEGLOBAL &AGE-HTML से पुर्प्राप्त किया

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.